OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 2

हृदय के सम्राट को हृदय से नमन...!!

ब्र.कु. गंगाधर

जब संसार एक ऐसे दौर से गुज़र रहा था, जहाँ हर मनुष्य के मन में एक संकल्प उठता कि कुछ परिवर्तन होना चाहिए। पर कैसा परिवर्तन, किस तरह से आयेगा, ये एक सवाल हरेक के ज़हन में सवाल बनकर ही रह जाता। विश्व में चारों ओर हाहाकार, अत्याचार और प्रकृति के तांडव के मध्य कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसे में कौन हमें इससे पार पहुंचायेगा!

फिर ऐसे में एक दिव्य-अलौकिक शक्ति का आगमन इस धरा पर होता है। आरंभ में तो कोई उसे पहचान नहीं सका, पर जिन्होंने पहचाना, वे उन्हीं की राह पर चल पड़े। हम अनुभव के आधार से बताना चाहते हैं कि वो शक्ति थी 'परमपिता परमात्मा शिव'। उन्होंने आकर अपने वत्सों को विश्व परिवर्तन के कार्य के लिए तैयार किया जिसमें नारी शक्ति को आगे रखा। जिसका एक संगठन बनाया, उसी का नाम रखा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। उन्हें सृष्टि-चक्र के ज्ञान से सुसज्जित किया। कैसे हमारा भारत पुनः सोने की चिड़िया बनेगा यह स्पष्ट किया। इस संगठन में परमात्मा को पहचानने और उनके निर्देशन में चलने वालों में से एक हम सबकी स्नेही दादी हृदयमोहिनी रहीं। दादी हृदयमोहिनी ने लौकिक पढ़ाई तो बहुत नहीं की थी किंतु हृदय की भाषा समझने में उन्हें महारत हासिल थी। वे व्यक्ति के हृदय को तो जान ही लेतीं किंतु उससे भी परे परमात्म-हृदय को भी अपने सरल, साफ, स्पष्ट और शुद्ध हृदय से मोह लिया था। पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के अव्यक्तारोहण के पश्चात् वें 2020 में इस विश्वव्यापी संगठन की मुखिया बनीं और ईश्वरीय सेवाओं के कारोबार को और तीव्रगति से आगे बढ़ाया।

दादी हृदयमोहिनी को परमात्मा में सम्पूर्ण निश्चय था। वे पूर्णतः जानती थीं कि ये परमात्मा का कार्य है और ये होकर ही रहेगा। इसीलिए वे निश्चिंत भी रहती थीं। यहाँ निश्चिंत रहना माना कर्म से भागना नहीं है। किंतु उसको और ही कुशलता पूर्वक करते हुए उसके बीच में आने वाली प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष बाधाओं से बिना विचलित हुए करना। मुम्बई के हॉस्पिटल में स्वास्थ्य लाभ लेते हुए भी दादी जी संगठन में आने वाली एक बहुत बड़ी विघ्न को जाना, समझा और निवारण के लिए निर्देश दिये। दादी जी को दिव्य दृष्टि का वरदान प्राप्त था। हमारा ये दादी जी के साथ का अनुभव है कि दादी जितनी गम्भीर थीं उतनी ही रमणीक भी। दादी से यज्ञ कारोबार के सम्बंध में जब भी मिलना होता, दादी बहुत ही कम शब्दों में स्पष्ट और सटीक उत्तर देकर हमें हल्का कर निश्चिंत कर देतीं। जब हम ज्ञानसरोवर के कारोबार को देख रहे थे तो दादी जी वहाँ आती थीं और सबमें उमंग-उत्साह भर हल्का कर देती थीं। दादी जी का सानिध्य पाना, ये हर कोई के लिए एक लॉटरी से कम नहीं होता था। दादी की दिव्यता और रूहानियत की कशिश सबके दिलों को छू लेती थी। जो कोई उनसे मिलता, वो उन्हें भुला नहीं पाता। दादी जी कम सोचतीं परंतु श्रेष्ठ व शुभ चिंतन में खोई रहतीं। उनकी बुद्धि परमात्मा पर केन्द्रित थी। दादी का परमात्मा के साथ एकाकार रहने और उनके पावरफुल वायब्रेशन के कारण जो भी उनसे मिलने जाता वो सुकून महसूस करता। वो अपने आप को हल्का व तरोताज़ा अनुभव करता।

अपने भाग्य के गीत गाते खुशी में झूमते रहें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम सभी एक-दूसरे को देख खुश होते हैं क्यों? क्योंकि हमको बाबा ने सारे विश्व में से चाहे इंडिया हो या कोई भी स्थान, सब जगह से चुनकर सिकीलधा बनाया है। कितना सुन्दर हॉल बनाकर दिया है, जिसमें मेरे बच्चे बैठे हैं। उन्हें ज़रा भी दुःख न हो,इतना ख्याल रखता है बाबा बच्चों का। बाबा को सभी बच्चों से विशेष प्यार है। बाबा का बच्चों की एक-एक चीज़ पर अटेन्शन जाता है। हमने साकार बाबा को देखा, बच्चों की खुशी के लिए अपनी जान देने को भी तैयार रहता था, बस मेरे बच्चों को दुःख न हो। हम सभी भी बाबा के प्यार के हकदार हैं। जितना बाबा का प्यार स्वीकार करते रहेंगे उतना ही अपने को भाग्यवान समझेंगे। अगर कोई बीमार भी होता था तो बाबा कहता था बच्चे की बीमारी मुझे लग जाये, बच्चे को नहीं। क्या हमें भी बाबा से इतना प्यार है? प्यार में तो क्या नहीं कुर्बान किया जा सकता! स्थूल वस्तु नहीं, सूक्ष्म संस्कारों को बाबा पर कुर्बान करना, क्या बड़ी बात है! बाबा हमारा कितना ध्यान रखते हैं, यह देख बहुत खुशी होती है। दिल से निकलता है वाह बाबा वाह!

बाबा ने बच्चों के लिए कितने सुख के साधन बनाये हैं। हम जब यहाँ आते हैं तो आपका जीवन देख हमें भी हमारा बचपन याद आ जाता है। बाबा ने हमें भी बहुत सुख के साधन दिये थे। फिर सेवा में लग गये, सेवा में तो अपने-अपने ढंग के स्थान होते हैं लेकिन जब तक साकार बाबा के साथ थे तो बहुत सुख के साधन मिले, जैसे अभी आपको मिले हैं। आपके भाग्य को देख खुशी होती है - वाह मेरे भाई-बहनें वाह! बाबा ने प्यार से आपके लिए यह स्थान बनवाया है। भल दूसरों के सहयोग से बना है,लेकिन बनवाने वाला कौन? बाबा। कदम-कदम पर वाह बाबा वाह! का अनुभव करते रहो। यहाँ संगठन में हर प्रकार के साधन होना कम बात नहीं। आपको जो यहाँ साधनों के साथ ज्ञान और योग की पालना मिल रही है, उसको स्मृति में रख खुशी में झूमना चाहिए।

संगठन में एक-दो के गुण देख उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाओ, बातों में नहीं जाओ। संगठन का भी फायदा उठाओ। जो अन्तर का सुख यहाँ है, वह सतयुग में भी नहीं होगा। बाहर कुछ भी होता रहे लेकिन बाबा हमें हर हाल में खुश रखता है। ऐसा बाबा फिर कल्प के बाद ही मिलेगा। बाबा ने हमें सैलवेशन के साथ जो दिल की खुशी दी है वह कहीं भी मिल नहीं सकती। आपकी जीवन साधारण नहीं, भले भाव-स्वभाव का टकराव तो संगठन में होता ही है लेकिन बाबा का प्यार सब भुला देता है। ज्ञान ताकत देता है। सदा दिल से यही निकलता रहे वाह मेरा बाबा वाह! दुनिया में क्या लगा पड़ा है और बाबा ने हमारा भाग्य कितना श्रेष्ठ बना दिया। खुशी होती है ना? यहाँ खुशी के बिना और है ही क्या? अगर थोड़ा बहुत कुछ होता भी है, वह हिसाब-किताब संगठन में चुक्तू हो रहा है। बाबा हमें रोज़ खुशी का खज़ाना देता है,कमाल है बाबा की। धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहाँ परिवार और स्कूल दोनों हैं। जब क्लास में होते तो स्कूल लगता और जब एक साथ खाते-पीते हैं तो घर लगता है। यहाँ दोनों भासना आती है। हमें सदा खुशनुमः रहना है, बातों से डरना नहीं है।

एक बाबा को ढाल बनाओ तो पुराने सब संस्कार परिवर्तन हो जायेंगे

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा की मुरली में तो सब सुनते हैं लेकिन यह मुरली मेरे लिए है, यह दवाई का डोज़ बाबा ने मेरे लिए दिया है, वह तीर के समान समझ लें, ऐसा बहुत कम समझते हैं। इसलिए मुरली पर सबका अटेन्शन एक जैसा नहीं रहता। यह गोली जो शूट हुई यह मुझे ही मारने वाली है, ऐसा कोई मुश्किल ही समझते हैं, अपने प्रति पावरफुल घाव कोई नहीं समझता। बाबा हमारे ऊपर इतनी भिन्न-भिन्न युक्तियों का बाण रोज़ क्यों मारता? क्या यह मुरली शास्त्र की तरह पढ़ने या सुनने तक है? क्या बाबा हमें बहलाने के लिए यह सब टोटके सुनाकर जाते, या यह एक-एक मुरली हमारे प्रति है? यह एक-एक लाखों रुपये का रत्न बाबा मेरे लिए खर्च कर रहा है, क्या मैं एक-एक रत्न की इतनी कीमत देती हूँ? यह जो धारणा की मुरली हम सुन रहे हैं, इतना बाबा हमें डीप ते डीप गुह्य बाण लगाता, फिर भी हमारे दिमाग में क्यों नही बैठती। पुराने संस्कार मिटते क्यों नहीं? बाबा ने कहा बापदादा से भेंट करो और कमियों की भेंट चढाओ तो क्या मैं बाबा से कदम-कदम पर भेंट करती या आत्माओं के पीछे सारा दिन हमारी दृष्टि घूमती? यह ऐसा क्यों बोलता, यह ऐसा क्यों करता... बाबा से पल-पल भेंट करनी है, जैसे बाबा हमारा सम्पूर्ण बना तो हमें भी सम्पूर्ण बनना है - आत्माओं से हमारी भेंट क्यों होती? अगर बाबा से भेंट करते रहो तो यह सब भेंट खत्म हो जायेंगी।

बुद्धि को बिजी रखो यदि हमारी बीजरूप पावरफुल स्थिति बनती जाये तो यह सब पुराने संस्कार खत्म हो जायेंगे। बुद्धि को निरन्तर मनन-चिन्तन में बिजी नहीं करते इसलिए बुद्धि नीचे की बातें रमण करना शुरू करती। जैसे बाढ़ आती तो बांध दिया जाता है या उसको दूसरी तरफ मोड़ दिया जाता, तो हमारी बुद्धि में संकल्पों की बाढ़ ही क्यों आवे? जो इधर-उधर भटके। बुद्धि ओवरफ्लो क्यों होती? हमको बाबा ने जो ज्ञान दिया है वह आधार ही है सम्पूर्ण बनने का। हमारी बुद्धि निर्मल गंगा के पानी की तरह चलती रहे, ओवरफ्लो नहीं होनी चाहिए।

यह संगम का समय बहुत ही कीमती है, यही घड़ियां संस्कारों को परिवर्तन करने की मिली हैं, फिर अगर हम कहें क्या करूँ - यह संस्कार मिटता ही नहीं, क्या यह कहना शोभा देता? बाबा को ढाल बनाओ तो सब संस्कार मिट जायेंगे, जो अपने कड़े संस्कारों को बदल सकता वही दूसरों के भी बदल सकता, मायाजीत वाले ही तो दूसरों को भी मायाजीत बनने का साधन दे सकेंगे। बाबा भी इस पुरानी दुनिया में था, उसने भी अपनी सारी जीवन इस दुनिया में बिताई लेकिन क्या बाबा के मुख से कभी किसी ने सुना - क्या करूँ यह मेरा भी पुराना संस्कार मिटता नहीं। किसी ने बाबा की चलन से, बाबा के व्यवहार से कब ऐसा देखा? जब साकार हमारे सामने सैम्पुल था, उसने कभी नहीं कहा तो फिर हमारे मुख से यह शब्द क्यों निकलते? मैं बाबा का हूँ, मुझे बाबा समान बनना है यह है तीव्र पुरुषार्थ। ऐसा लक्ष्य रखो तो परिवर्तन करना मुश्किल नहीं। अगर वर्णन करते मैं क्या करूँ तो यह भी कमी है। दूसरे का संस्कार तो फौरन नोट हो जाता, अपना नहीं,क्यों? स्वर्ग में तो परिवर्तन नहीं होना है, जब करना ही यहाँ है तो ढीलापन क्यों रहता? सदैव अटेन्शन रहे कि मेरे रजिस्टर में कोई भी नुक्स का मार्क्स नहीं होना चाहिए।

पूर्वज की स्मृति सदा रहे तो चेहरे पर साधारणता आ नहीं सकती

आज तीन बारी ओम शान्ति का भिन्न विचार आ रहा है, विचार माना अनुभव हो रहा है। एक सेकण्ड में त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक यह भान आता है। जैसे बाबा ने कहा जब कोई नॉलेज पढ़ते हैं, तो समझते हैं फलाना बनूँगा और हम अभी अनुभव कर रहे हैं, पढ़ते-पढ़ते याद में बैठे हैं, कुछ काम तो कर रहे हैं ना! याद में क्या है? त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी यह भान देह के भान से स्वतः ही परे कर देता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। संगमयुग पर बाबा मिला सबकुछ मिला, कोई इच्छा नहीं, ममता नहीं। बाबा से जो मिला है वह स्वप्न में, संकल्प में है सबको मिले, यह भावना काम कर रही है। वृत्ति, वायब्रेशन और वायुमण्डल से बहुत अच्छी सेवा हो रही है। सहज योग, सहज सेवा और इतना बड़ा परिवार है तो स्नेह और सकाश भी काम कर रहा है।

ईश्वरीय अलौकिक परिवार में हम खुश, आप खुश, बाबा भी खुश। बाबा ने कहा वाह बच्चे वाह! तो हम सब मिल करके वाह बाबा वाह! कहेंगे। भगवान के बच्चे हैं। भगवान मेरा साथी है, सेवा मेरा भाग्य है, सिम्पल है। ज्ञान बहुत सहज, सिम्पल, अच्छा, रमणीक है। कभी हँसने-बहलने के लिए रमणीक बातें भी चाहिए। वैसे अन्दर इसी मनन-चिंतन में रहते.. समय को सफल कर रहे हैं। सतयुग में हम कैसे होंगे, वह कोई बड़ी बात नहीं है, अभी कैसे है? फिर लगता है बाबा कहते हैं हम भगवान के बच्चे हैं, पर विश्व की सर्व आत्माओं के लिए हम पूर्वज हैं। पूर्वज कुछ भी बोलते नहीं हैं। पूर्वजों के चेहरे में साधारणता नहीं होती है। पूर्वज की स्थिति बनाके रखना किसका काम है? हमारा ना! ऊंचे ते ऊंचे बाबा हैं, बाबा ने क्या से क्या बनाया है। वो दिन और आज के दिन बाबा की बहुत सेवायें हुई हैं। बाकी ये सेवा दुनिया में हरेक आत्मा को पता चले, मेरा बाबा कौन है? परमेश्वर, वो मुझे अपना बच्चा समझे, मैं उसको अपना बाप समझूं। न सिर्फ बाप, पर पाँचों सम्बन्धों की शक्ति अलग-अलग है माँ, बाप, शिक्षक, सखा, सतगुरु। हरेक सम्बन्ध में अपनी शक्ति है। एक भी सम्बन्ध मिस नहीं है, मिक्स है तो समथिंग मिसिंग होगा।

पदमापदम भाग्यशाली वह है जो बाप को फॉलो करे और हम सब मिल करके फादर को फॉलो कर रहे हैं। जैसे बाबा कहते हैं - जी बाबा कहने में बहुत मजा है। बाबा के हरेक शब्दों का अर्थ सहित फायदा लेने में मजा आता है। बाबा कहते कोई बात समझ में नहीं आती है तो बाबा से पूछो, नहीं तो महारथियों से पूछो। तो मेरे कमरे में पूर्वजों का फोटो रखा है, घड़ी-घड़ी देखती हूँ हरेक ने जी बाबा, मेरा बाबा कहा है, जैसा बाबा ने कहा वैसा ही किया है। सभी पूर्वज आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार रहे हैं। अन्दर से उनकी शक्ति काम कर रही है। उन्होंने परमात्मा से जो शक्ति पाई है, जिससे अपना भविष्य बनाया है, वह सेवा अब भी कर रहे हैं, तब तो इतनी वृद्धि हो रही है। हमारा झाड़ बहुत बढ़ता जा रहा है। इस झाड़ में हरेक पत्ता भी शोभनिक है। साकार बाबा से यह स्पष्ट अनुभव होता था, साकार में निराकार, तो साकार बाबा शरीर में होते हुए भी निराकारी, निरहंकारी बना है निर्विकारी बनने से। जब तक निर्विकारी नहीं बनें तब तक निराकारी स्थिति बन नहीं सकती। तो हरेक देखें एक सेकण्ड कि निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी कहाँ तक बने हैं? यह रहस्य युक्त बड़ा अच्छा अतीन्द्रिय सुख तो क्या, फरिश्ता रूप की स्थिति में अनुभव कराता है। तो अनुभवी ही जाने इस सुख को।

राजयोगिनी दादी जानकी जी